© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

श्रीहर्षविरचित नैषधीयचरितम् में शब्दालंकार

मोनिका यादव

JRF शोधच्छात्रा

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

अलंकार शब्द दो शब्दों से – अलम् – कार से मिलकर बना है जिसका अर्थ है है – शोभाकारक पदार्थ।

अलंकारोतित्यलंकारः अर्थात् अलंकृत करने वाले तत्वों को अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार लोक में कटक, कुण्डल आदि अलंकारों के द्वारा कामिनी का शरीर विभूषित होता है उसी प्रकार काव्य के सौन्दर्य में उपमादि अलंकारों के द्वारा अतिशय वृद्धि होती है। काव्य के शरीर भूत धर्म हैं – शब्दार्थ अलंकारों के द्वारा शब्दार्थ की वृद्धि होती है।

आचार्यवामन ने भी अलंकार को सौन्दर्य का बोधक मानते हुए कहा कि – **''सौन्दर्यम् अलंकार है अर्थात् सौन्दर्य ही अलंकार है।''**[1]

आचार्य दण्डी ने 'काव्य के शोभाकारक धर्म को अलंकार माना है।[2] काव्यशोभाकरान धर्मान् अलंकारानपचक्षते। समन्वयवादी आचार्य मम्मट ने भी अलंकारों को परिभाषित करते हुए कहा है कि –

उपकुर्वन्तिं तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।

हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ।[3]

इस प्रकार सभी अलंकारवादी शास्त्रियों ने अलंकार को सौन्दर्य वृद्धि का साधन माना है। काव्य में इसका प्रयोग भावों को सजाने एवं रमणीयता लाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

अलंकार के भेद

शब्द और अर्थ से युक्त काल के शोभाधायक तत्त्व अलंकार के मुख्यतः 3 भेद हैं – शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा उभयालंकार ।

---

1. काव्यालंकार
2. काव्यादर्श
3. काव्यप्रकाश

शब्दालंकार तथा अर्थालंकार का भेद शब्द के परिवर्तन सहत्व या परिवर्तनासहत्व के ऊपर निर्भर होता है। शब्दालंकार जहाँ काल में चमत्कार शब्द पर ही आश्रित होता है अर्थात् शब्द का परिवर्तन करके उसका पर्यायवाचक दूसरा शब्द रख देने पर अलंकार नहीं रहता, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

अर्थालंकार – जहाँ काव्य में चमत्कार शब्द पर नहीं, अर्थ पर आश्रित रहता है अर्थात् शब्द का परिवर्तन करके दूसरा पर्यायवाचक शब्द रख देने पर भी अलHार की सत्ता बनी रहती है तो उसे अर्थालंकार कहा जाता है।

प्रस्तुत महाकाव्य में हम केवल शब्दालंकार का अध्ययन करेंगे। शब्दालंकार के कई भेद हैं।

नैषधीयचरितम् में शब्दालंकार –

श्रीहर्ष की भाषा अलङ्कृत है। इन्होंने अपने महाकाल में अलंकारों का प्रयोग बहुत ही कुशलातपूर्वक किया है। नैषधीयचरितम् में अलंकारों का अद्भुत समन्वय किया गया है। नैषधीयचरितम् में अलंकारों का विवेचन आचार्य मम्मट के लक्षणों एवं भेदों के आधार पर किया गया है ।

नैषधीयचरितम् में श्रीहर्ष ने विभिन्न शब्दालंकारों का प्रयोग किया है, जो निम्न है –

1. वक्रोक्ति अलंकार –

वक्ता द्वारा अन्य अर्थ में कहा हुआ वाक्य का यदि श्रोता द्वारा श्लेष या काकु अर्थात् बोलने के लहजे से अन्य अभिप्राय कर लिया जाता है तो वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। वह श्लेष वक्रोक्ति और काकु– वक्रोक्ति के नाम से ही पुकार का होता है – प्रस्तुत महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में – नल के विरह में सन्तप्त दमयन्ती अपनी सखियों से काकु तथा श्लेष वक्रोक्ति में ही कहती है कि –

अकरुणादव सूनशराऽसून् सहजयाऽऽयादि धीरतयाऽऽत्मनः ।
असव एव ममाद्य विरोधिनः क्रथमरीन् सखि ! रक्षितुमात्य माम् ?।।[4]

सखि सुन्दरी, विपत्ति में धैर्य पूर्वक इस निर्दय पुष्पवाण से अपने प्राणों की रक्षा करो।

दमयन्ती –आज प्राण ही तो मेरे विरोधी हो गये हैं। मुझसे वैरियों की रक्षा करने को क्यों कहती हो ?

यहाँ सखी दमयन्ती के जिन प्राणों को ईष्ट बताती है, वहीं दमयन्ती उन्हें अपना शत्रु तथा उनकी रक्षा करने को आश्चर्य का विषय बताती है।

श्लेष वक्रोक्ति –

स्फुटति हारमणौ मदनोष्मणा हृदयमप्यनलंङ्कृतमद्य ते।
सखि ! हताऽस्मि तदा यदि हृदयपि पिग्रतमः स मम व्यवधापितः ।।[5]

---

4. नैषधीय – 4/102
5. नैषधीयचरितम् – 4/109

सखि दमयन्ती से कहती है कि कामजनित विरहाग्नि से हार की मणि टूट जाने के कारण तुम्हारा ह्रदय भी अनलङ्कृत (अलVार रहित हो जाना) हो गया है।

इस बात को सुनकर दमयन्ती कहती है, सखि – यदि प्रियतम मेरे ह्रदय से दूर हो गये तो मैं मर ही गयी, यहाँ अनलंङ्कृत का तात्पर्य अलVार विहीन, किन्तु दमयन्ती ने अर्थ लिया अ – नल – कृत (नल विहीन)

अनुप्रास अलVार –

वर्णों की समानता को अनुप्रास कहते हैं । नैषधीयचरितम् में अनुप्रास की छटा दर्शनीय है –

1. **कुलं सुधांऽशोर्बहुलं व्रहन्वहु ।।**[6]
2. **पुण्येन् मन्ये पुनस्यजन्म ।।**[7]

छेकानुप्रास – अनेक वर्णों के स्वरूप तथा क्रमानसार एक बार आवृत्ति होने पर छेकानुप्रास होता है –

1. **कल्याणि कल्यानि तवांगकानि कच्चितमां चित्तमनाविलं ते।**[8]
2. **भम्रामि ते यौमि ! सरस्वतीरसप्रवाह चक्रेषु निपत्य कत्यदः ।।**[9]

बृत्यनुप्रास :

ईशानिमैवर्श्यविवर्तमध्ये ! लोकेश लोकेशयलोकमध्ये ।[10]

अन्त्यानुप्रास :

धार्यः कथंकारमहं भवत्या वियद्विहारी वसुधैकगत्या।[11]

श्लेष अलंVार –

श्लिष्ट शब्दों के द्वारा अनेक अर्थों का कथन श्लेष अलVार है।

श्रीहर्ष ने काम–चमत्कार के लिए श्लेष अलVार का समुचित प्रयोग किया है।

श्लेष अलVार दो प्रकार का होता है –

1. शब्द श्लेष

---

6. नैष0 – 1/110
7. नैष0 – 8/33
8. नैष0 – 8/57
9. नैष0 – 9/57
10. नैष0 – 3/64
11. नैष0 – 3/15

2. अर्थ श्लेष

शब्द श्लेष के भी अभX , सभX तथा उभयात्मक तीन भेद हैं। नैषधीयचरितम् में उनका वर्णन प्राप्त होता है।

अभX श्लेष – असाम यन्नाम तदेह रूपं स्वेनाधिगत्य श्रितमुग्धभावाः ।

तन्नो धिगाशापतितान्नरेन्द्र ! धिक् चेदमस्मद्विबुधत्वमस्तु।।[12]

यहाँ श्रितमुग्धभाव, अधिगत्य (जानकर, लेकर), आशापतिता (आशा में पड़े हुए, दिशाओं के स्वामी) में अभX श्लेष है।

सभX श्लेष – का नाम बाला द्विजराजपाणिग्रहाभिलाषं कथयेदभिज्ञा।[13]

यहाँ द्विजराज – चन्द्रमा को हाथ से पकड़ना, राजा नल से विवाह होने की अभिलाषा आदि अर्थ श्लिष्ट रूप में व्यक्त हैं।

यमक अलंVार – किन्तु अर्थ होने पर भिन्नार्थक वर्णों को उसी क्रम से पुनः श्रवण यमक नामक शब्दालVार होता है। वह और उसके एक–एक देश आदि भाग में रहने से यमक अलंHार के 11 भेद होते हैं –

नैषधीयचरितम् में यमक अलVार का भी सौन्दर्य दर्शनीय है। उदाहरणार्थ –

किं च प्रभावनमिताखिलराजतेजा देवः पिताऽम्बरमणीरमणीयमूर्तिः।[14]

यहाँ 'अम्बररमणी रमणीयमूर्ति' ' (1) रमणीयमूर्ति वाले सूर्य।

(2) अम्बरमणि सूर्य तथा कामदेव के समान सुन्दर शरीर वाले।

श्रीहर्ष की भाषा सालंकार है, परन्तु उन्होंने अलHारों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। अलVारों के प्रयोग द्वारा श्रीहर्ष ने काव्य में चमत्कार तथा सौन्दर्य की वृद्धि की है। अलVार उनके काव्य की शोभा हैं। अलVारों का स्वाभाविक प्रयोग काव्य के सौन्दर्य में चारूतर वृद्धि करता है तथा नैषधीयचरितम् को एक आदर्श महाकाम के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

---

12. नैषधी0 – 3/59
13. नैषध0 – 3/59
14. नैषध0 – 8/60